



RISHI VISHWAMITRA VIDYA FOUNDATION

ऋग्वेद मन्त्र ज्ञान

मण्डल १, सूक्त २, मन्त्र ५

Presented by: Acharya Kapil

Contact No: 8756390767

प्रस्तावना एवं मूल मन्त्र

वेदों में छिपे ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म को समझने की शृंखला में आज हम ऋग्वेद के प्रथम मण्डल, द्वितीय सूक्त के ५वें मन्त्र का गहराई से अध्ययन करेंगे। इस मन्त्र में आचार्य सायण (कर्मकाण्ड) और महर्षि दयानन्द (वैज्ञानिक/आध्यात्मिक) दोनों के भाष्य का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

वायुविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू ।
तावा यातुमुप द्रवत् ॥५॥

(वायो इति । इन्द्रः । च । चेतथः । सुतानाम् । वाजिनीवसू इति वाजिनीवसू । तौ । आ । यातम् । उप । द्रवत् ॥)

पदार्थ (Word Meanings)

वायो (वायुविन्द्रश्च = वायो + इन्द्रः + च): हे वायु! / हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर!

इन्द्रः: हे इन्द्रदेव! / हे विद्युत् (ऊर्जा) अथवा जीवात्मा!

च: और (समुच्चय अर्थ में) ।

चेतथः: तुम दोनों जानते हो / चेतना देते हो / प्रकाशित करते हो ।

सुतानाम्: उत्पन्न किए गए पदार्थों को / निचोड़े हुए सोम रस को ।

वाजिनीवसू: अन्न-युक्त यज्ञों में निवास करने वाले / उषा के समान प्रकाश और वेग वाले ।

तौ: वे तुम दोनों ।

आ यातम्: आओ / प्राप्त होओ ।

उप: समीप (सामीप्ये) ।

द्रवत्: शीघ्र (क्षिप्र) ।

ॐ आचार्य सायण का भाष्य (कर्मकाण्ड एवं आधिदैविक अर्थ)

अर्थ: हे वायुदेव! और हे इन्द्रदेव! आप दोनों ही यज्ञ में निचोड़े हुए (अभिषुत) सोम रसों के विषय में भली-भाँति जानते हैं। अन्न से युक्त इस हवि-रूप यज्ञ (वाजिनी) में निवास करने वाले (वसू) आप दोनों देवता, हमारे समीप शीघ्र (द्रवत्) पधारें और हवि ग्रहण करें।

दृष्टिकोण: यहाँ मन्त्र का सीधा अर्थ यज्ञीय कर्मकाण्ड से है, जहाँ ऋत्विज इन्द्र और वायु का आवाहन कर रहे हैं ताकि वे आकर सोमपान करें।



महर्षि दयानन्द का भाष्य (वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक अर्थ)

अर्थ: हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर (वायु)! और हे जीवात्मा (इन्द्र)! आप दोनों ही संसार में उत्पन्न किए गए (सुतानाम्) सभी पदार्थों को चेतना देते हैं और उन्हें प्रकाशित करते हैं। प्रकाश और वेग (वाजिनीवसू) को धारण करने वाले आप दोनों (परमात्मा और जीवात्मा) शीघ्रता से हमारे समीप आएँ अर्थात् हमें ज्ञान और ऊर्जा की प्राप्ति हो।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (भौतिक विज्ञान): 'वायु' (Gas/Air) और 'इन्द्र' (Electricity/Energy) - ये दोनों प्रकृतियाँ मिलकर संसार के सभी उत्पन्न पदार्थों (सुतानाम्) को गति और चेतना (चेतथः) प्रदान करती हैं। जिस प्रकार उषा (वाजिनी) प्रकाश और वेग लाती है, वैसे ही वायु और विद्युत् ऊर्जा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पदार्थों में शीघ्रता (द्रवत्) से संचारित होकर उन्हें क्रियाशील बनाते हैं।

व्याकरण एवं निरुक्त

चेतथः: यह 'चित्' (संज्ञाने) धातु से बना है। यहाँ 'व्यत्यय' (वैदिक व्याकरण का नियम जहाँ लकार, पुरुष आदि बदल जाते हैं) का प्रयोग है, जिससे यह लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन का रूप है। अर्थ है - "तुम दोनों जानते हो या चेताते हो"।

सुतानाम्: 'षु प्रसवैश्वर्ययोः' अथवा 'षुञ् अभिषवे' धातु से क्त प्रत्यय लगकर 'सुत' शब्द बना है। षष्ठी बहुवचन में 'सुतानाम्' (उत्पन्न किए गए पदार्थों का / निचोड़े हुए सोम का)।

वाजिनीवसूः

सायण के अनुसार: 'वाज' का अर्थ है अन्न। जिसमें अन्न या हवि है वह 'वाजिनी' (यज्ञ परम्परा)। उसमें बसने वाले (वसत इति) 'वाजिनीवसू'।

दयानन्द/निरुक्त के अनुसार: निघण्टु (१.८) में 'वाजिनी' उषा (Dawn) का नाम है। जो उषा के समान प्रकाश और वेग में निवास करते हैं, वे वाजिनीवसू हैं। आमन्त्रित होने के कारण यह पद अनुदात्त है।

द्रवत्: यह शब्द निघण्टु (२.१५) में पठित २६ 'क्षिप्र' (शीघ्र/Fast) नामों में से एक है (नु, क्षिप्रं, मधु, द्रवत्...)। 'दु गतौ' (दौड़ना/जाना) धातु से यह सिद्ध होता है।

मन्त्र विनियोग (Ritual Application)

विनियोग: इस मन्त्र का विनियोग मुख्य रूप से सोमयाग (अग्निष्टोम आदि यज्ञों) में होता है। जब यज्ञ में इन्द्र और वायु देवता के निमित्त संयुक्त रूप से सोम रस का प्याला (ग्रह) भरा जाता है, तब इस मन्त्र का पाठ किया जाता है। इसे "ऐन्द्रवायव ग्रह" कहते हैं।

प्रमाण: "वायविन्द्रश्चेत्यैन्द्रवायवस्य" (आश्वलायन श्रौतसूत्र ४.५.३ / शौनक सूत्र)

अर्थात् - "वायविन्द्रश्च..." इस मन्त्र के द्वारा 'ऐन्द्रवायव' (इन्द्र और वायु के संयुक्त) ग्रह (पात्र) में सोम ग्रहण किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

यह वैदिक मन्त्र जहाँ एक ओर यज्ञशाला में मन्त्र-विज्ञान के तहत इन्द्र (विदुत्) और वायु शक्तियों के संतुलन का आवाहन करता है, वहीं आध्यात्मिक रूप से ईश्वर और आत्मा के मिलन तथा वैज्ञानिक रूप से 'ऊर्जा' (Electricity) और 'गैस' (Air) के द्वारा भौतिक जगत के संचालन का अद्भुत रहस्य खोलता है।